PRATEHKALEEN PRAVACHAN-SANT KIRPAL SINGH-1967-69

प्रातःकालीन प्रवचन – संत कृपाल सिंह – 1967 – 69

CD 1 of 12

1. Chastity I-Pvittrata(Brahmcharya) I - पवित्रता (ब्रह्मचर्य)I
2. Relationship of Guru and Disciple-Guru Shishya ke beech rishta -गुरु शिष्य के बीच में रिश्ता
3. Sevadar Service I-Sewa I- सेवा I

4-5. Sevadar Service II-Sewa II- सेवा II

CD 2 of 12

1. God is Love-Prabhu Prem Hai - प्रभु प्रेम है
2. Importance of Love I-Prem ka mahatv I - प्रेम का महत्व I
3. Importance of Love II-- Prem ka mahatv II - प्रेम का महत्व II

CD 3 of 12

1. Pathi- Hymn-Sahbd Pathi - शब्द पाठी
2. Love-Prem- प्रेम
3. Pathi -Hymn-Shabd Pathi- शब्द पाठी
4. Humility-Nmarta- नम्रता

CD 4 of 12

1. Pathi-Hymn-Shabd Pathi- शब्द पाठी
2. Chastity II-- Pvittrata(Brahmcharya) II- पवित्रता (ब्रह्मचर्य)II
3. Pathi-Hymn-Shabd Pathi- शब्द पाठी
4. Charity-Daan ya seva dena- दान या सेवा देना
5. Non-violence--Ahinsa - अहिंसा
6. Pathi-Hymn-Shabd Pathi- शब्द पाठी
7. Living Master is a Great Blessing-Jeete Jagte Mahapurush ka milna ek ganimat hai
   - जीते जागते महापुरुष का मिलना एक गनीमत है।
8. Pathi Hymn-Shabd Pathi - शब्द पाठी
9. Sweet Remebrance Develops Love-Madhur yaad se Prem Badhta hai- मधुर याद से प्रेम बढ़ता है।

CD 5 of 12

1. Pathi Hymn-Shabd Pathi- शब्द पाठी
2. Love is a Subject of Heart, Not of Head I-Prem ka sambandh Dil se hai, Dimag se Nahin.
   - प्रेम का संबंध दिल से है, दिमाग से नहीं।
3. Our Love Should be for the Master-Hmara Prem Guru se hona Chahiye.- हमारा प्रेम गुरु से होना चाहिए।
4. Love Comes From the Eyes of The Master-Prem Guru ki Aankhon se Prapat Hota hai.
   - प्रेम गुरु की आंखों से प्राप्त होता है।
5. Love leads to complete surrender-Prem se Puran Smarpan upjta hai.- प्रेम से पूर्ण समर्पण उपजता है।
6. Whom Should We Love?-Hamen kis se Prem Karna Chahiye?- हमें किससे प्रेम करना चाहिए?
7. Come Out of the Delusion-Bhram se Bahr Niklen.- भ्रम से बाहर निकलें।

CD 6 of 12

1-2. Who is the True Master?-Saccha Satguru Kaun hai?- सच्चा सत्गुरु कौन है?

3. True Devotion Bears Fruit-Sacchi Shrdha Rang Lati hai.- सच्ची श्रद्धा रंग लाती है।
4. Impediments on the Way-Is Raste par Rukavten.- इस रास्ते पर रुकावटें।
5. Why We should Love the Master I ?-Hamen Guru se Prem Kyon Karna Chahiye I ?
   - हमें गुरु से प्रेम क्यों करना चाहिए?
6. How to do Devotion to God ?-Prabhu ki Bhakti Kaise Kren? - प्रभु की भक्ति कैसे करें?

CD 7 of 12

1. Know Thyself-Apane Aap ko Jano.- अपने आप को जानो
2. Regularity Develops Devotion-Nirantarta se Bhav-Bhakti Paida Hoti hai.- निरन्तरता से भाव-भक्ति पैदा होती है।

CD 8 of 12

1. Principles of Bhkti-Bhakti ke Sidhant- भक्ति के सिद्धांत
2. Obedience to the Master I-Satguru ka Hukm Manana I- सत्गुरु का हुक्म मानना I
3. What type of Devotion Bears Fruit?-Kis Tareh ki Bhakti Fal Lati hai? - किस तरह की भक्ति फल लाती है?
4. By His Will Alone is Service in the Master' Cause Allotted.-Kewal Prabhu/Satguru ki Ichha se hi us ki seva ka avsar milta hai. - केवल प्रभु/सत्गुरु की इच्छा से ही उस की सेवा का अवसर मिलता है।
5. Righteous Living- A Life of Self-restraint --Saccha Jivan-Ek Niyantrit Jivan-सच्चा जीवन -एक नियंत्रित जीवन।

CD 9 of 12

1. Purpose of Satsang-Satsang ka Uddeshye- सत्संग का उद्देश्य
2. Benefit of Radiation Through Receptivity-Grehansheelta ke dvara Prapat radiation ka Laabh. - ग्रहणशीलता के द्वारा प्राप्त रेडियेंस का लाभ
3. Bread and Water of Life-Jivan ki asli Khurak.- जीवन की असली खुराक
4. The Single Eye-Ek Aankh Banna- एक आंख बनना
5. Value of the Company of a Saint-Sant ki sangat ke Laabh- संत की संगत के लाभ
6. What is Love?-Prem Kya Hota hai?- प्रेम क्या होता है?
7. How to Love God?-Prabhu se Prem Kaise Karen?- प्रभु से प्रेम कैसे करें?

CD 10 of 12

1. Love is the Fruit from a Tree-Prem ek Drakht ka fal hai- प्रेम एक दरख्त का फल है।
2. The Real Independence-Sacchi Aazadi- सच्ची आज़ादी
3. Value of the Master's Pleasure-Satguru ki Khushi ke Laabh- सत्गुरु की खुशी के लाभ
4. Whom Should We Love?-Hamen kis se Prem Karna Chahiye?- हमें किस से प्रेम करना चाहिए?
5. Love or Attachment I-Prem ya Lampat taie I- प्रेम या लंपटताई I

CD 11 of 12

1. Love or Attachment II-- Prem ya Lampat taie II- प्रेम या लंपटताई II
2. Obedience to The Master II-- Satguru ka Hukm Manana II- सत्गुरु का हुक्म मानना II
3. How Love is Developed?-Prem Kaise Panpta hai?- प्रेम कैसे पनपता है?
4. The Way Back to God-Prabhu ki taraf raasta-प्रभु की तरफ रास्ता
5. Love With Surrender-Prem ke sath Aatam Smarpan - प्रेम के साथ आत्म-समर्पण
6. Love is a Subject of Heart, Not Head II-- Prem ka sambandh Dil se hai, Dimag se Nahin II - प्रेम का संबंध दिल से है, दिमाग से नहीं II

CD 12 of 12

1. Prayer- Prarthana- प्रार्थना
2. True Love - Sachcha Pyar- सच्चा प्यार
3. Why Devotion is Necessary?-Bhav-bhakti kyon zaroori hai?- भाव-भक्ति क्यों ज़रूरी है?
4. Why We Should Love The Master II?-- Hamen Guru se Prem Kyon Karna Chahiye II ? - हमें गुरु से प्रेम क्यों करना चाहिए II?

प्रातःकालीन प्रवचन – संत कृपाल सिंह – 1967 – 69
12 – सी. डी. का सैट

संत कृपाल सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि उनसे पहले हुए महापुरुषों में से बहुत कम ने ही अपने बारे में खुद लिखा। आम तौर पर उनके शब्दों को सुनकर दूसरों ने लिखा। महाराज जी फरमाते थे कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें इस समय में उनकी (महाराज जी की) छपी पुस्तकें, उन्हीं की आवाज़ में सत्संग और फिल्में / फोटोएं लाभ प्राप्त करने के लिए उपलब्ध हैं।

ये प्रातःकालीन प्रवचन सावन आश्रम दिल्ली (भारत) में 1967 के अंतिम महीनों से लेकर 1969 के शुरू के दिनों में रिकार्ड किए गए हैं।

उस समय यह हर रोज़ का रूटीन था कि शिष्य आश्रम में सुबह – सुबह भजन के लिए शैड में बैठ जाया करते थे। भजन के बाद महाराज जी शैड में बैठी संगत में उनके भजन में तरक्की जानने तथा कुछ हिदायत देने आ जाया करते थे।

एक दिन उन्होंने हमें अगली सुबह के लिए टेप रिकार्डर साथ लाने को कहा। इससे यह स्पष्ट था कि महाराज जी रूहानियत के विभिन्न पहलुओं पर सत्संगीजनों के लिए सार – गर्भित प्रवचन देने वाले हैं।

पक्षियों की चहचहाट, कौवों की कां – कां, मिस्त्रियों की टक – टक, बच्चों के खेलने के शोर, चीजें बेचने वालों की ऊँची आवाज़ों, नज़दीक से गुज़र रही ट्रेन की आवाजों तथा ऐसे ही दूसरे शोर के बीच महाराज जी ने भविष्य के लिए हिन्दी और अंग्रेज़ी में ये महत्वपूर्ण प्रवचन रिकार्ड करवाये।

महाराज जी हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में ये प्रवचन देते थे। आम तौर पर पहले वे हिंन्दी में बोलते थे, फिर उसी को साधारण तरीके से अंग्रेजी में दोहराते थे। अंग्रेजी का हिस्सा 13 सी. डी. के सैट में बना है जिस पर कि अंग्रेज़ी में मार्निंग टाक्स पुस्तक छप चुकी है। अब यह हिन्दी भाषा के प्रवचनों का सैट 12 सी. डी. में पेश किया जा रहा है।

ये सी. डीज़. पुरानी टेपों से तैयार की गई हैं। आशा है कि आप इनसे लाभ उठायेंगे।

कुक्कू नरेन्द्रा, ऐलीन विग्ग